नरसंहार की प्रवृत्ति

गंगानन्द झा

भाषा, संस्कृति, प्रौद्योगिकी एवं कृषि जैसे सांस्कृतिक लक्षण हमें जानवरों से अलग पहचान देते हैं। दुर्भाग्यवश मानव पहचान के एकाधिक अंधेरे पहलू भी हैं।

रसायनों का दुरुपयोग पूरी तरह से मनुष्य की खासियत है। हममें हमारे अस्तित्व के लिए संकट उत्पन्न कर सकने लायक जातिसंहार एवं अन्य प्रजातियों को निर्मूल करने जैसे लक्षण हैं। हम तय नहीं कर पा रहे कि इन बातों को बीमार मानसिकता के कारण पथभ्रष्ट होने का नतीजा माना जाए या मानव प्रकृति का बुनियादी लक्षण माना जाए।

रसायनों के दुरुपयोग के अलावा हमारे व्यक्तित्व के अंधेरे पक्ष में दो ऐसे गंभीर लक्षण शामिल हैं जो हमें पतन की गहराई में ले जा सकते हैं। विदेशीभीति (ज़ीनोफोबिया) के चलते अन्य मानव समूहों को मारने की हमारी प्रवृत्ति इन दो में से एक है।

रसायनों के दुरुपयोग के अलावा हमारे व्यक्तित्व के अंधेरे पक्ष में दो ऐसे गंभीर लक्षण शामिल हैं जो हमें पतन की गहराई में ले जा सकते हैं। विदेशीभीति (ज़ीनोफोबिया) इन दो में से एक है।

जानवरों में इस प्रवृत्ति के प्रत्यक्ष पूर्व लक्षण मौजूद हैं। जैसे किसी भी प्रजाति के समूहों एवं व्यक्तियों के बीच विवाद जिनका नतीजा खूनखराबे में होता है। हमने हत्या करने के अपने कौशल को उन्नत करने में अपनी प्रोद्यौगिकी क्षमताओं का भरपूर उपयोग किया है।

सन 1886 ईस्वीं में ऑस्ट्रेलियावासी अपने राष्ट्र की स्थापना का द्विवार्षिक समारोह मना रहे थे। विरोधियों के एक समूह के प्रदर्शन ने समारोह में विघ्न उत्पन्न किया था। गोरे उपनिवेशी प्रथम ऑस्ट्रेलियावासी नहीं थे। यह टापू आज से पचास हज़ार साल पहले आज के ऑस्ट्रेलियाई देशज कहे जाने वाले लोगों के पूर्वजों द्वारा आबाद किया गया था। इन्हें ऑस्ट्रेलिया में काले भी कहा जाता है। अंग्रेज़ों के उपनिवेशन प्रक्रिया के क्रम में मूल निवासियों में से अधिकांश मारे गए, या दूसरे कारणों से मर गए। बचे हुए लोगों के वंशजों में से कुछ लोगों ने समारोह में शामिल न होकर विरोध प्रदर्शन आयोजित किया था। समारोह की विषयवस्तु ऑस्ट्रेलिया के गोरे होने की प्रक्रिया पर केन्द्रित थी।

यहां हम इस बात की पड़ताल करना चाहते हैं कि इस देश की काली आबादी पर कैसे ग्रहण लग गया और कैसे अंग्रेज़ों ने उस जाति का सफाया किया। टासमानिया के मूल निवासियों का सफाया जाति संहार के दृष्टांत के तौर पर पेश किया जा सकता है। सन 1642 ईस्वीं में युरोपियन लोग ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण-पूर्वी तट से दो सौ मील की दूरी पर स्थित द्वीप टासमानिया पहुंचे थे। तब वहां के निवासियों की आबादी करीब पांच हज़ार थी। ये लोग ऑस्ट्रेलिया की मुख्यभूमि के निवासियों की जाति के ही थे। सन 1800 ईस्वीं के आसपास अंग्रेज़ उपनिवेशियों के आने के साथ-साथ इनके विनाश की प्रक्रिया शुरू हो गई।

अपहरणों एवं हत्याओं के चलते नवंबर 1830 तक उत्तर-पूर्वी टासमानिया में मूल निवासियों की कुल संख्या बहत्तर वयस्क पुरुष, और तीन महिलाओं तक सिमट गई थी। बच्चा एक भी नहीं था। एक गड़रिये ने उन्नीस टासमानियावासियों को अपनी कीलों से भरी बन्दूक से मार डाला था। अन्य चार गड़रियों ने आदिवासियों के एक समूह पर घात लगाकर हमला कर तीस लोगों को मारकर उनकी लाशों को एक टीले पर फेंक दिया था। यह टीला विक्टरी हिल (विजय पर्वत) कहलाता है।

यह कोई अनोखा जातिसंहार नहीं है। दरअसल, मूलवासियों के सफाए की चर्चा करने का कारण ही यही है कि यह जातिसंहार का अकेला और अनोखा दृष्टान्त नहीं है। हो सकता है कि नाज़ी शिविरों में यहूदियों की

सामूहिक हत्या जातिसंहार शब्द से हमारा पहला परिचय हो, लेकिन वह इस सदी का भी सबसे बड़ा नरसंहार नहीं था। टासमानियावासी और सैकड़ों अन्य जातियां अनेकों छोटे-छोटे निर्मूलीकरण अभियानों की शिकार थीं। दुनिया भर में बिखरी हुई असंख्य जातियां निकट भविष्य में निशाने पर हैं। फिर भी जातिसंहार ऐसा दर्दनाक विषय है कि हम इसके बारे में या तो सोचना भी नहीं चाहते, या मानना चाहते हैं कि 'अच्छे' लोग जातिसंहार नहीं किया करते, केवल नाज़ी ही करते हैं।

किन्तु सोचने से इंकार करने के गंभीर नतीजे होंगे। हमने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के असंख्य जातिसंहारों को रोकने का बहुत कम प्रयास किया है। भारतीय उपमहाद्वीप में विगत दशकों में होते रहे साम्प्रदायिक दंगे और बांग्ला देश के मुक्ति युद्ध के समय पाकिस्तानी सेना द्वारा बंगालियों का जातिसंहार हमारे निकट के उदाहरण हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि हम सावधान नहीं हैं कि अगली बार यह कब और कहां होगा।

मायूस होने की बहुत सारी वजहें हैं, मगर आशावादिता के आधार भी हैं कि शायद भविष्य अतीत जैसा भयावह नहीं होगा।

अपने पर्यावरणीय संसाधनों को नष्ट करने की हमारी प्रवृत्ति और जातिसंहार प्रवणता के साथ नाभिकीय अस्त्रों का जुड़ जाना, दो सबसे अधिक संभावित तरीके हैं जिनसे मानवजाति अपनी सारी प्रगति को एक रात में उलट सकती है।

जातिसंहार के बारे में बुनियादी सवाल पर विवाद रह ही गए हैं। क्या अपनी ही प्रजाति के सदस्यों को मारते रहना जानवरों की दिनचर्या का हिस्सा नहीं है या क्या यह मनुष्य की ऐसी प्रवृत्ति है जिसका जानवरों में कोई पूर्व उदाहरण नहीं है? मानव इतिहास में जातिसंहार अपवाद रहे हैं या इतने सामान्य कि इन्हें शिल्प, कला और भाषा की तरह मनुष्य की पहचान के लक्षणों में गिना जा सकता है? ऐसा क्यों हुआ है कि अनेक ऐसी घटनाओं में से बहुत कम ने ही हमारा ध्यान आकृष्ट किया है? क्या जातिसंहार में शामिल हत्यारे असामान्य व्यक्ति होते हैं या वे असामान्य स्थितियों में रहने वाले सामान्य लोग होते हैं?

ज़ाहिरा तौर पर मायूस होने की कई वजहें हैं। दुनिया में ऐसी जगहें भरी पड़ी हैं जो जातिसंहार के लिए तैयार प्रतीत होती हैं। जातिसंहार को उद्धत निरंकुश सरकारें बेलगाम लगती हैं। आधुनिक हथियारों के ज़खीरे कहीं अधिक तादाद में शिकार बनाने की ही नहीं बल्कि मानव जाति का सामूहिक खात्मा करने की ताकत भी देते हैं।

पर इसके साथ सजग आशावादिता के आधार भी हैं कि शायद भविष्य अतीत जैसा भयावह नहीं होगा। आज कई देशों में विभिन्न जातियों, नस्लों, और धर्मों के समूह अलग-अलग स्तर के सामाजिक न्याय के साथ रह रहे हैं। उनके बीच खुल्लम खुल्ला खूनखराबा नहीं होता रहता। अनेकों जातिसंहार तीसरे पक्षों के हस्तक्षेप द्वारा सफलतापूर्वक बीच में बंद किए गए, रोके गए या कम किए जा सके हैं।

नाज़ियों द्वारा यहूदियों के सफाए के अभियान, जो सारे जातिसंहारों में सबसे अधिक दक्ष एवं न रोका जा सकने वाला था, की तीव्र भर्त्सना डेनमार्क, बुल्गारिया जैसे कई अधिकृत राज्यों के चर्चों ने निर्वासन की प्रक्रिया की शुरू होते ही की थी।

एक अतिरिक्त आशाजनक चिन्ह आधुनिक यात्राएं, टी.वी. एवं फोटोग्राफी की उपलब्धता है जो हमें दिखलाती है कि हज़ारों मील दूर रहने वाले लोग भी हमारी ही तरह के मनुष्य हैं। आधुनिक प्रौद्योगिकी विभिन्न मानव समुदायों के बीच के फर्क को कम करती जा रही है। यह फर्क ही जातिसंहार को संभव बनाता है। जातिसंहार सभ्यता के प्राथमिक चरणों में स्वीकार्य ही नहीं, प्रशंसनीय भी हुआ करता था, जबकि अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति और दूर-दूर के लोगों के सम्बंध में त्वरित जानकारी के आधुनिक युग में इसे उचित ठहरा पाना रोज़बरोज़ मुश्किल होता जा रहा है।

फिर भी जातिसंहार का संकट हमारे साथ तब तक रहेगा ही जब तक हम इसे समझने से इंकार करते रहेंगे तथा जब तक हम अपने आपको इस धारणा से ठगते

रहेंगे कि अच्छे लोग जातिसंहार नहीं करते, केवल विकृत चेतनायुक्त लोग ही ऐसा करते हैं। जातिसंहार के बारे में पढ़ते हुए चेतनाशून्य न होना मुश्किल है। मुश्किल है यह कल्पना करना कि हम या अन्य 'अच्छे' लोग किसी को मारते रहें और फिर भी हमें विवेक का दंश न हो।

जो परिस्थितियां अच्छे लोगों पर जातिसंहार में भागीदार बनने की संभाव्यता, थोपती हैं, हम सब में अंतर्निहित है। ज्यों-ज्यों विश्व की जनसंख्या में हो रही वृद्धि मानव समाजों के बीच अंतर्द्वन्द्वों को तीक्ष्ण करती जाएगी, हममें एक-दूसरे की हत्या करने की और अधिक से अधिक हथियार संग्रह करने की प्रवणता बढ़ती जाएगी। जातिसंहार का आंखों देखा विवरण सुनना अत्यंत यंत्रणादायक होता है। पर अगर हम इसे समझने से बचते और इंकार करते रहें, और इसकी समझदारी विकसित न करें, तो कहा नहीं जा सकता कि कब हत्यारे या हत्या के शिकार होने की बारी हमारी होगी। ***(स्रोत फीचर्स)***